

## Chapter 3: Dohe - Bihari

### दोहे - बहारी

#### 1. Poet Introduction: Bihari Lal

- जन्म: 1603 ई., ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में
- पूरा नाम: बहारी लाल चौबे
- पति: केशवराय, ब्राह्मण परिवार
- शिक्षा: संस्कृत, हिंदी और फारसी का गहन अध्ययन
- आश्रयदाता: जयपुर के महाराज जयसहि
- विशेषता: रीतिकाल के शृंगार रस के अद्वितीय कवि
- भाषा: ब्रजभाषा, अत्यंत परिष्कृत और सरस
- काव्य शैली: मुक्तक काव्य, दोहा छंद में रचना
- मुख्य ग्रंथ: "बहारी सतसई" - केवल 719 दोहों का संग्रह, लेकिन अत्यंत प्रसिद्ध
- उपाधि: "दोहे का बादशाह", "सतसई के कवि"
- विशेष उक्ति: "सतसई के दोहरे, ज्यों नावक के तीर । देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर । ।"
- मृत्यु: 1663 ई. (लगभग), जयपुर में

#### 2. Historical and Literary Context

- रीतिकाल: बहारी रीतिकाल (1643-1843) के प्रमुख कवि थे
- रीतिकाल की विशेषता: शृंगार रस की प्रधानता, नायिका भेद, अलंकार शास्त्र का विचन
- राजदरबारी काव्य: राजाओं के आश्रय में काव्य रचना, दरबारी संस्कृतिका चित्रण
- समकालीन कवि: केशवदास, घनानंद, भूषण, देव
- बहारी की विशेषता: अन्य रीतिकालीन कवियों की तरह बहारी ने लंबे ग्रंथ नहीं लिखे, केवल 719 दोहे लिखे
- गगर में सागर: बहारी के दोहे अत्यंत संक्षिप्त लेकिन अर्थपूर्ण हैं
- जयसहि प्रसंग: कहा जाता है कि महाराज जयसहि अपनी नई रानी में इतने मग्न थे कि राजकाज भूल गए । बहारी ने एक दोहा लिखकर भेजा - "नहि पिराग नहि मिधुर मधु..." जिससे राजा को होश आया

#### 3. Literary Philosophy and Style

- शृंगार रस की प्रधानता: बहारी के दोहों में शृंगार रस (संयोग और वियोग दोनों) का सुंदर चित्रण

- संक्षिप्तता और गहराई: छोटे दोहे लेकिन गहरे अर्थ - "सत्सई के दोहरे ज्यों नावक के तीर"
- नायिका भेद: विभिन्न प्रकार की नायिकाओं का वर्णन - खंडिता, कलहांतरिता, विप्लवबाधा, प्रोषतिपतिका आदि
- प्रकृति चित्रण: प्रकृतिका मानवीकरण, प्रकृति को प्रेम का माध्यम बनाना
- अलंकार योजना: उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अन्योक्ति आदि अलंकारों का सहज प्रयोग
- रस निष्पत्ति: थोड़े शब्दों में पूर्ण रस की निष्पत्ति
- चमत्कारपूर्ण शैली: शब्दों का ऐसा प्रयोग कि पाठक चमत्कृत हो जाए
- लोक जीवन का चित्रण: दरबारी जीवन के साथ-साथ लोक जीवन का भी सुंदर चित्रण

#### 4. Detailed Doha Analysis

दोहा 1: "नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास इह काल..."

पूर्ण दोहा: "नहि पराग नहि मधुर मधु, नहि विकास इह काल । अली कली ही सौ बंध्यो, आगे कौन हवाल । ।"

- शब्दार्थ: पराग = फूल की रज, मधु = शहद, विकास = खलिना, इह काल = इस समय, अली = भ्रमर, कली = कली (अधखलिना फूल), बंध्यो = बंधा हुआ, हवाल = हाल/दशा
- भावार्थ: इस समय न पराग है, न मधुर शहद है, न फूल खलिना है । फिर भी भ्रमर कली से ही बंधा हुआ है । आगे जब फूल खलैगा तो इसकी क्या दशा होगी?
- गहरा अर्थ: यह दोहा महाराज जयसहि को संदेश था । नई रानी अभी युवा है (कली), फिर भी राजा उसमें इतने मग्न हैं । जब वह पूर्ण यौवन को प्राप्त होगी (फूल खलैगा) तो राजा का क्या हाल होगा?
- अलंकार: अन्योक्ति अलंकार - भ्रमर और कली के माध्यम से राजा और रानी का वर्णन
- उद्देश्य: राजा को कर्तव्य की याद दिलाना
- प्रभाव: इस दोहे ने राजा जयसहि को होश में ला दिया और उन्होंने राजकाज संभाला

दोहा 2: "कहत नटत रीझत खीझत, मलित खलित लजयित..."

पूर्ण दोहा: "कहत नटत रीझत खीझत, मलित खलित लजयित । भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सौं बात । ।"

- शब्दार्थ: नटत = इंकार करना, रीझत = प्रसन्न होना, खीझत = नाराज होना, खलित = खलिना, लजयित = लजाना, भरे भौन = भरी सभा
- भावार्थ: भरी सभा में प्रेमी-प्रेमिका केवल आंखों से ही बातें करते हैं । कभी कहना, कभी मना करना, कभी रीझना, कभी खीझना, कभी मलिना, कभी खलिना, कभी लजाना - सब आंखों के माध्यम से
- विशेषता: नायक-नायिका के प्रेम का मनोवैज्ञानिक चित्रण
- अलंकार: अनुप्रास अलंकार - कहत, नटत, रीझत, खीझत, मलित, खलित
- संदेश: सच्चा प्रेम शब्दों में नहीं, भावों में होता है

दोहा 3: "मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरिसोय..."

पूर्ण दोहा: "मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरिसोय । जा तन की झाई परे, स्याम हरति दुताहोय । ।"

- शब्दार्थ: भव बाधा = जन्म-मरण का बंधन, नागरि = चतुर, झाई = छाया, स्याम = काला, हरति = हरा

- भावार्थ: वह राधा जो अत्यंत चतुर है, मेरे जन्म-मरण के बंधन को हरे। जिसके शरीर की छाया पड़ने से काले श्रीकृष्ण हरे रंग के हो जाते हैं (पीताम्बर के कारण)
- चमत्कार: काला + पीला = हरा (रंग मश्रण का सुंदर प्रयोग)
- भक्तिभाव: राधा की महिमा का गुणगान

## 5. Key Themes and Characteristics

- शृंगार रस की प्रधानता: संयोग और वयौग दोनों शृंगार का सुंदर चित्रण
- नायिका भेद: वभिन्न स्थितियों में नायिका का मनोवैज्ञानिक चित्रण
- प्रेम की विविध अवस्थाएं: प्रथम मलिन, प्रेम का विकास, वयौग की पीड़ा, मलिन की आशा
- प्रकृति का मानवीकरण: प्रकृति को प्रेम का साथी बनाना
- संक्षिप्तता में पूर्णता: "गागर में सागर" - कम शब्दों में अधिक अर्थ
- चमत्कारपूर्ण शैली: शब्दों का अद्भुत प्रयोग, नए-नए अर्थ निकालना
- लोक जीवन का चित्रण: दरबारी जीवन के साथ ग्रामीण जीवन का भी वर्णन
- भक्तिभाव: कुछ दोहों में राधा-कृष्ण की भक्ति का भी समावेश

## 6. Literary Devices and Poetic Excellence

- भाषा: शुद्ध ब्रजभाषा, अत्यंत मधुर और सरस
- छंद: दोहा छंद (13-11 मात्राएं)
- अलंकार विधान:
  - उपमा: "बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय"
  - रूपक: प्रकृति को नायिका मानना
  - उत्प्रेक्षा: "मानो..." की कल्पना
  - अनयोक्ति: प्रकृति के माध्यम से मानव जीवन का चित्रण
  - अनुप्रास: वर्णों की आवृत्ति
- शब्द शक्ति: लक्षणा और व्यंजना का सशक्त प्रयोग
- रस नषिपत्ति: थोड़े शब्दों में पूर्ण रस का संचार
- बबि विधान: सजीव और स्पष्ट चित्र
- मनोवैज्ञानिक चित्रण: नायक-नायिका की मनोदशा का गहन विश्लेषण
- संक्षिप्तता: "सत्सई के दोहरे ज्यों नावक के तीर, देखन में छोटे लगै घाव करै गंभीर"

## 7. Important Exam Questions

प्रश्न 1: "नहपिराग नहमिधुर मधु..." दोहे का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस दोहे में बहिरि ने अनयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया है। भ्रमर और कली के माध्यम से महाराज जयसहि को संदेश दिया कि अभी नई रानी युवा है (कली), फरि भी आप उसमें इतने मग्न हैं कि राजकाज भूल गए। जब वह पूर्ण यौवन को प्राप्त होगी



प्रश्न 2: बहिरी के दोहों में शृंगार रस का वर्णन कीजिए ।

उत्तर: बहिरी रीतिकाल के शृंगार रस के अद्वितीय कर्वा हैं । उनके दोहों में संयोग और वियोग दोनों शृंगार का सुंदर चित्रण है । नायक-नायिका के प्रेम, मलिन की आशा, वियोग की पीड़ा, ईर्ष्या, मान-मनौवल आदिका मनोवैज्ञानिक वर्णन मलिता है ।

प्रश्न 3: "सत्सई के दोहरे ज्यों नावक के तीर" - इस उक्तिका क्या अर्थ है?

उत्तर: इस उक्तिका अर्थ है कबिहिरी के दोहे तीर की तरह हैं - देखने में छोटे लगते हैं लेकिन गहरा घाव करते हैं । यानी बहिरी के दोहे संक्षिप्त हैं लेकिन उनका अर्थ बहुत गहरा और प्रभावशाली है । "गागर में सागर" की तरह कम शब्दों में अधिक अर्थ ।

प्रश्न 4: बहिरी की भाषा शैली की विशेषताएं बताइए ।

उत्तर: (1) शुद्ध और परष्कृत ब्रजभाषा, (2) संक्षिप्तता और गहराई, (3) अलंकारों का सहज प्रयोग, (4) चमत्कारपूर्ण शब्द योजना, (5) लयबद्ध और मधुर, (6) प्रतीकात्मक शैली ।

प्रश्न 5: बहिरी सत्सई की विशेषताएं लिखिए ।

उत्तर: (1) केवल 719 दोहों का संग्रह लेकिन अत्यंत प्रसिद्ध, (2) शृंगार रस की प्रधानता, (3) संक्षिप्तता में पूर्णता, (4) विविध विषयों का समावेश - प्रेम, भक्ति, नीति, (5) अलंकार शास्त्र का उत्कृष्ट उदाहरण, (6) हिंदी साहित्य की अमूल्य नधि ।